Hons. Part-I & III

PHILOSOPHY

Hons., Paper-I (Part I) & Paper VIII (Part-III)

Dr. S. K. Singh
mob - 9431449951.

Refutation of Shankara's Mayavada
(शंकर के मायावाद का खंडन)

→ शंकर अपने 'माया सिद्धान्त' के द्वारा ब्रह्म की पारमार्थिक सत्ता और जगत-जीव प्रपञ्च के मध्य सामंजस्य स्थापित करने का प्रयास करते हैं। रामानुज ने शंकर के इस मायावाद या अविद्या-सिद्धांत की आलोचना की है। रामानुज के अनुसार माया ब्रह्म की सत्य या वास्तविक शक्ति है जिससे वे इस सत्य सृष्टि का निर्माण करते हैं।

रामानुज शंकर के मायावाद के सात प्रमुख दोषों को बताते हैं जिन्हें 'सप्त-अनुपपत्ति' कहा जाता है। ये सात दोष इस प्रकार हैं -

(i) आश्रयानुपपत्ति → माया का आश्रय क्या है? यदि माया का आश्रय ब्रह्म है तो फिर ब्रह्म का शुद्धज्ञानस्वरूप होने की अवधारणा खंडित होने लगती है। पुनः माया और ब्रह्म दोनों की सत्ता माननी पड़ेगी जिससे अद्वैतवाद पर आघात होगा। माया का आश्रय जीव को भी नहीं माना जा सकता क्योंकि जीव स्वयं अविद्याजन्य है। स्पष्ट है कि अविद्या का आश्रय अस्तित्व है।

इस के प्रत्युत्तर में शंकर के अनुयायियों का कहना है कि यद्यपि ब्रह्म ही माया या अविद्या का आधार है लेकिन वह स्वयं माया से कभी भी प्रभावित नहीं होता जिस प्रकार जादूगर अपनी मायावी शक्ति से स्वयं प्रभावित नहीं होता।

(ii) तिरोधानुपपत्ति → यदि ब्रह्म शुद्ध स्वप्रकाश ज्ञानस्वरूप है तो फिर अविद्या उसे कैसे तिरोहित या आच्छादित कर लेती है? अतः या तो ब्रह्म ज्ञानस्वरूप नहीं है या फिर उसका उसे आच्छादित नहीं कर सकता।

शंकर के अनुयायियों का कहना है कि जिस प्रकार मेघ कुछ देर के लिये सूर्य को आच्छादित कर देता है उसी प्रकार ब्रह्म भी अज्ञान से ढक जाता है। परन्तु इससे ब्रह्म के मूल स्वरूप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

(iii) स्वरूपानुपपत्ति → रामानुज का प्रश्न है कि अविद्या का स्वरूप क्या है? क्या संभव स्वरूप है - सत्, असत्, सदसत् (सत् + असत्) और अनुभय (न सत् + न असत्)।

Scanned with CamScanner

यदि यह सत् या भावरूप है तो फिर इसका अन्त नहीं हो सकता। यदि यह असत् है तो फिर जगत प्रपञ्च का ब्रह्म पर आरोपण नहीं हो सकता। पुनः अविद्या को सदसत् भावना रूप मानना आत्मव्याघाती है क्योंकि सत् और असत्, प्रकाश एवं अन्धकार के समान एक साथ नहीं रह सकते। इसे अनुभयात्मक मानना चिन्तन प्रक्रिया से विमुख होना है। अतः माया का स्वरूप है क्या?

शंकर के अनुयायियों के अनुसार माया भावरूप है। यहाँ माया को भावरूप कहने का तात्पर्य केवल इतना है कि कि वह अभावमात्र नहीं है। माया भावरूप होते हुये भी अपनी सत्ता के लिये ब्रह्म पर आश्रित है।

(iv) अनिर्वचनीयानुपपत्ति → माया को अनिर्वचनीय कहना भी उसके संबंध में वक्तव्य देने के समान है। पुनः विश्व के सभी पदार्थ या तो सत् हैं, या फिर असत्। इन दो कोटियों से परे अनिर्वचनीयता को मानना तर्कसंगत नहीं है।

प्रत्युत्तर में शंकर के अनुयायियों का कहना है कि माया को सत् और असत् से विलक्षण अनिर्वचनीय मानने में कोई दोष नहीं है। माया सत् नहीं है क्योंकि इसका बाध हो जाता है, असत् (बन्ध्यापुत्र की भाँति) भी नहीं है क्योंकि इसकी प्रतीति होती है। ~~अतः अनिर्वचनीय~~

(v) प्रमाणानुपपत्ति → माया की सिद्धि का कोई प्रमाण नहीं है। प्रत्यक्ष प्रमाण से इसकी (सत्-असत् विलक्षण की) सिद्धि नहीं हो सकती, अनुमानगम्य भी यह नहीं है क्योंकि माया का कोई हेतु नहीं है तथा पुनः शब्द प्रमाण से भी असिद्ध है क्योंकि शास्त्र तो इसे ब्रह्म की लीला मानते हैं।

अद्वैतवेदान्तियों का प्रत्युत्तर है कि माया का ज्ञान हमें अर्थापत्ति प्रमाण के द्वारा होता है।

(vi) निवर्तकानुपपत्ति → अविद्या माया का कोई निवर्तक (नष्ट करने वाला) नहीं है। अद्वैत वेदान्ती निर्गुण निर्विशेष ब्रह्म-ज्ञान को माया का निवर्तक मानते हैं। रामानुज के अनुसार ऐसा ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता। किन्तु अद्वैत वेदान्ती के अनुसार ~~किसी~~ ऐसा ज्ञान अज्ञान के निवारण से ही प्रकाशित हो जाता है क्योंकि ऐसी सत्ता में ज्ञाता-ज्ञेय-ज्ञान का ऐक्य हो जाता है।

(vii) निवृत्त्यनुपपत्ति → यदि माया भावरूप है तो उसका विनाश तर्कतः संभव नहीं है क्योंकि भावरूप सत्ता का नाश ज्ञान से संभव नहीं है।

शंकर के अनुयायियों के अनुसार माया को भावरूप मानने का केवल यही तात्पर्य है कि अभावरूप नहीं है और इसका आश्रय ब्रह्म है। अतः ~~और~~ अधिष्ठान (ब्रह्म) के ज्ञान के आधार पर एक आश्रित सत्ता की निवृत्ति संभव है।

Scanned with CamScanner